चाहती हूं कि 7 बजे उनका विमान चलना था। इसलिए करीब 4 बजे दोनों पति-पत्नी एयर-इंडिया के विमान पर चढ़ने के लिए अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंच गए। दोनों मूर्तियां उनके साथ थी। जब उन्होंने उन मूर्तियों को रखने की बात कही तो एयर-इंडिया के अफसर ने यह कहा की अधिकृत तौर पर एयर-इंडिया के विमान से हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तिया ले जाने की मनाही है। वह स्तब्ध रह गए कि वह किससे बात कर रहे हैं। राष्ट्रीय विमान सेवा, एयर-इंडिया यह मूर्तियां नहीं ले जाएगी। यह दूसरी बात है कि एक अफसर उनको दूसरे कोने में ले गया और कहा कि देखो, अधिकृत तौर पर तो हम नहीं ले जा सकते हैं लेकिन कुछ ले-देकर बात बन सकती है अगर तुम चाहो तो। उन्होंने साफ इंकार कर दिया कि हम ले दे कर नहीं ले जाएंगे बल्कि यदि बेगेज अगर बनता है तो उस का पूरा पैसा देने को तैयार हैं और रिश्वत के तौर पर कुछ नहीं देंगे। आप जानते हैं कि इन दोनों के पास एयर इंडिया के कंफर्म्ड टिकट थे, दोनों को विमान से उतार दिया गया। उन को पौने दस बजे तक दिल्ली हवाई अड्डे पर बंदी बनाकर रखा। उनको जाने नहीं दिया और अंततः उन्हें एयर इंडिया से जाने का कार्यक्रम रद्द करना पड़ा और एक विदेशी विमान सेवा से वे मूर्तियां लेकर लंदन गए।

श्रीमन, उन्होंने अपने पत्र में लिखा है कि उन्हें अचरज भरी खुशी हुई इस बात की कि विदेशी विमान सेवा के लोगों ने उन मूर्तियों को न केवल आदर के साथ चढ़ाया बल्कि हमारी भावनाओं को देखते हुए उन को लाने ले जाने में पूरी मदद की। अच्छी तरह से मूर्तियों को लंदन ले गए। लेकिन इस विलंब के कारण उन की स्थापना का समारोह स्थगित करना पड़ा और बड़ी वेदना से उन्होंने ये पत्र मुझे लिखा जिसकी प्रति मैंने सभापति जी को भी भेजी। इसलिए इस विशेष उल्लेख के माध्यम से मैं इस बात को सदन में रखते हुए सरकार से दो प्रश्न पूछना चाहती हूं कि क्या वाकई एयर इंडिया के ऊपर हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियां ले जाने पर पाबंदी लगाई गई है और अगर पाबंदी लगाई गई है तो उसका औचित्य क्या है। अगर पाबंदी नहीं लगाई गई है तो क्या इस तरह के दोषी, अपराधी अधिकारियों को, जिनके नाम में सदन की गारिमा को देखते हुए नहीं लेना चाहती, उन के नाम पत्र में लिख गए हैं, तो क्या मंत्री महोदय इसके ऊपर कार्यवाही करेंगे और उन दोषी अधिकारियों को दंडित करेंगे? अगर वह ऐसा नहीं करेंगे तो क्या वह ऐसा आदेश देंगे कि राष्ट्रीय विमान सेवा अपने लोगों को अपने देवी देवताओं की मूर्तियां ले जाने से मना करे तो क्या वह चाहते हैं कि बाहर जाकर वह अपनी संस्कृति को त्याग दें, वह अपनी पूजा पद्धति को छोड़ दें? अगर धर्म-निरपेक्षता को ये मानते हैं तो मुझे बड़े दुख के साथ यह बात कहनी पड़ती है कि यह धर्म-निरपेक्षता नहीं है।

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): महोदय, यह अत्यंत गंभीर मामला है। इससे बड़ी क्या चीज होगी कि हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियां एयर इंडिया में नहीं जा सकतीं। इस देश में 86 परसेंट हिन्दू रहते हैं, क्या एयर इंडिया में उनकी मूर्तियां नहीं जा सकती हैं? आप लीडर आफ दी हाउस को कहिए कि वह इसकी इक्वांयरी करके बताएं।

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल): आसन से कोई निर्देश देना ठीक नहीं है, उन्होंने नोट कर लिया है इस बात को।

Failure of anti Kala-azar, Anti-Aids and Family Welfare Programmes in Bihar

श्री चतुरानन मिश्र (बिहार): महोदय, मैं इस विशेष उल्लेख के जरिए बिहार में स्वास्थ्य सेवा कोलेप्स कर गई है, इसकी तरफ सदन का ध्यान दिलाना चाहता हूं। गांवों में जो हेल्थ सेन्टर खुले थे वह तो कोलेप्स हो गये हैं डिस्ट्रिक्ट हास्पिटल्स वगैरह में भी न पानी की व्यवस्था है, न बिजली की व्यवस्था है न रोगियों को पथ्य और दवा मिलती है न आपरेशन थियेटर काम करते है और एक्स-रे मशीन वगैरह की प्लेटें भी सप्लाई नहीं होती। जो नई आर्थिक नीति हुई है इस के चलते राज्यों की जो आर्थिक स्थिति है उससे स्वास्थ्य सेवा बिलकुल कोलेप्स कर गया है। कोई काम नहीं हो रहा है। मैंने खुद भी जाकर देखा। भगवतीपुर नाम के एक गांव में गया जहां आपरेशन की व्यवस्था है फैमिली प्लानिंग की, लेकिन वहां पर कुछ भी नहीं था, बिजली नहीं थी, लाइट नहीं थी, टार्च लेकर गया और डिस्ट्रक्ट हास्पिटल्स का भी यही हाल है। बहुत ही दुख की बात है कि भारत सरकार की जो स्कीम चलीं वह भी कोलेप्स कर गई है। कालाजार की स्कीम को दो बार मैंने सेंट्रल मिनिस्टर को ले जाकर दिखाया। अभी 1700 मीट्रिक टन डी॰डी॰टी॰ आया उसका छिड़काव नहीं हुआ। एड्स जैसी भंयकर बीमारी के बारे में केन्द्रीय योजना भी ठप्प पड़ी हुई है। खून में एड्स की जांच व्यवस्था के अभाव में ब्लड बैंक ठप्प है। भारत सरकार ने 1994-95 का ग्रांट भी बंद कर दिया। उन्होंने कहा कि यूटिलाइजेशन भेजिए। हमारी सूचना के अनुसार स्वास्थ्य मंत्रालय के

सचिव द्वारा बार-बार पत्र भेजे गए कि आप उसकी रिपोर्ट दीजिए, तब भी नहीं आई। एड्स ऐसी बीमारी है जिस के फैलने से राष्ट्रीय विपत्ति हो सकती है। परिवार नियोजन की जो स्कीम है जिसमें बर्ल्ड बैंक भी फाइनेंस करता है वह भी आई०वी०पी० 7 प्रोजेक्ट को बिहार से हटाने के बारे में निर्णय ले लिया है। और उसके लिए पत्र लिख कर दिया है जो रोग घेघा होता है उसके लिए गोयटरे कंट्रोल स्कीम है वह भी कहीं पर काम नहीं कर रही है। जो नेशनल मलेरिया इरेडीकेशन प्रोग्राम है जो आदिवासी क्षेत्रों में होता है वहां भी डीडीटी छिड़की नहीं गई है। वहां के मलेरिया विभाग के अफसर भी नहीं रह पा रहे हैं। जो कर्मचारी थे उनको हटा दिया गया है। जो लेबोरेटरीज़ हैं उनमें जो टेक्नीशियंस होते हैं उनकी भी कोइ व्यवस्था नहीं है। इसलिए मलेरिया वहां पर घनघोर फैल गया है। जो टीबी कंट्रोल आर्डर है उसका भी यही हाल है। वह बढ़ रहा है। उसकी जांच करने के लिए स्पूटम एक्जामिनेशन वगैरह ठप्प है। जो नेशनल प्रोग्राम फार कंट्रोल एंड प्रिवेंशन ब्लाइंडनैस है वह भी ठप्प पड़ गया है। इसका कोई काम नहीं हो रहा है। बिहार सरकार के पास पैसा नहीं है। उसने जो 92-93 का बजट बनाया था उसमें 93.59 करोड़ का प्रावधान रखा था उसमें मात्र 42 करोड़ रुपये दिये गये। इसलिए मैं इस बात को यहां पर रख रहा हूं कि टोटल हेल्थ प्रोग्राम कोलेप्स हो गया है। केन्द्र इस पर ध्यान दे। वहां के मुख्य मंत्री को बुलाकर बात करे और जो आर्थिक सहायता देनी चाहिए उसकी तुरन्त व्यवस्था करें। और जरूरत हो तो आर्टीकल 256 का इस्तेमाल किया जाए ताकि केन्द्र के आदेशों का पालन हो सके और इस तरह से मरते हुए लोगों को बचाया जा सके। नहीं तो हम ऐसा समझ रहे हैं कि अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होती जायेगी। इस मामले में भारत सरकार को तुरन्त हस्तक्षेप करना चाहिए।

श्री जलालुद्दीन अंसारी (बिहार): मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए कहना चाहता हूं कि मिश्रा जी ने जो सवाल उठाया है बिहार की स्थिति के बारे में वह सही बात है। मैं आपको यह कहना चाहता हूं कि गया जैसे एक अन्तर्राष्ट्रीय शहर में एक पिलग्रिम अस्पताल है। केन्द्रीय सरकार जांच करा ले। वहां पर मुश्किल से 5 मरीज ही मिल सकते हैं। वह भी मरने के लिए जाते हैं। इसी तरह से लेडी एलीजन हस्पताल है। वहां भी पांच ही पेशेन्ट आपको मिलेंगे। यहां पर देशी, विदेशी पर्यटक आते हैं। यहां की स्थिति भी वही है जो मिश्रा जी ने बताई। पूरी बिहार में स्थिति यही है।

شری جلال الدین انصاری: میں اپنے کو سمبدھ کرتے ہوئے ایک شبد کہنا چاہتا ہوں کہ مشرا جی نے جو سوال اٹھایا ہے بہار کی استھتی کے بارے میں وہ صحیح بات ہے میں آپ کو یہ کہنا چاہتا ہوں کہ گیا جیسے ایک انترراشٹریہ شہر میں ایک پیلگریم اسپتال ہے۔ کیندریہ سرکار جانچ کرالے۔ وہاں پر مشکل سے ۵ مریض ہی مل سکتے ہیں۔ وہ بھی مرنے کے لیے جاتے ہیں۔ اسی طرح سے "لیڈی ایلیجن اسپتال" ہے۔ وہاں بھی ۵ ہی پیشنٹ آپ کو ملیں گے۔ یہاں پر دیشی ودیشی پرٹک آتے ہیں۔ یہاں کی استھتی بھی وہی ہے جو مشرا جی نے بتائی۔ پورے بہار میں استھتی یہی ہے

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल): बहुत अच्छी तरह बता दिया आपने।

श्री जलालुद्दीन अंसारी: इस दिशा में बिहार के बारे में वहां के स्वास्थ्य के बारे में विशेष कदम उठाये जाएं और जो कार्यक्रम बनायें जाएं उनको अच्छी तरह से लागू करके अस्पताल को चलाया जाए।

*

شری جلال الدین انصاری: اس دیشا میں بہار کے بارے میں وہاں کے سواستھ کے بارے میں وشیش قدم اٹھائے جائیں اور جو کاریہ کرم بنائے جائیں ان کو اچھی طرح سے لاگو کر کے اسپتال کو چلایا جائے۔

Failure of NTPC Unit of Farakka

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE (West Bengal): Sir, this is regarding the 500 MW fourth unit of the NTPC at Farakka. This was in operation from October 1993 only, and it became inoperative from 15th Janaury 1994 because of the breakdown of the electrostatic precipitator which is nothing but an auxiliary part of a boiler. Till now it has not come back into opertion even after five months. We are not aware of the reasons for the failure. This boiler has been supplied by a multinational. It does not take more

*[ ]Transliteration in Arabic Script.